

## वंश की रक्षा

किसी पर्वत प्रदेश में मन्दविष नाम का एक वृद्ध सर्प रहा करता था। एक दिन वह विचार करने लगा कि ऐसा क्या उपाय हो सकता है, जिससे बिना परिश्रम किए ही उसकी आजीविका चलती रहे। उसके मन में तब एक विचार आया।

वह समीप के मेंढको से भरे तालाब के पास चला गया। वहाँ पहुँचकर वह बड़ी बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा। उसे इस प्रकार घूमते देखकर तालाब के किनारे एक पत्थर पर बैठे मेंढक को आश्चर्य हुआ तो उसने पूछा,

“मामा! आज क्या बात है? शाम हो गई है, किन्तु तुम भोजन-पानी की व्यवस्था नहीं कर रहे हो?”

सर्प बड़े दुःखी मन से कहने लगा,

“बेटे! क्या करूँ, मुझे तो अब भोजन की अभिलाषा ही नहीं रह गई है। आज बड़े सवेरे ही मैं भोजन की खोज में निकल पड़ा था। एक सरोवर के तट पर मैंने एक मेंढक को देखा। मैं उसको पकड़ने की सोच ही रहा था कि उसने मुझे देख लिया। समीप ही कुछ ब्राह्मण स्वाध्याय में लीन थे, वह उनके मध्य जाकर कहीं छिप गया।” उसको तो मैंने फिर देखा नहीं। किन्तु उसके भ्रम में मैंने एक ब्राह्मण के पुत्र के अंगूठे को काट लिया। उससे उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। उसके पिता को इसका बड़ा दुःख हुआ और उस शोकाकुल पिता ने मुझे शाप देते हुए कहा,

“दुष्ट! तुमने मेरे पुत्र को बिना किसी अपराध के काटा है, अपने इस अपराध के कारण तुमको मेंढको का वाहन बनना पड़ेगा।” “बस, तुम लोगो के वाहन बनने के उद्देश्य से ही मैं यहाँ तुम लोगो के पास आया हूँ।”

मेंढक सर्प से यह बात सुनकर अपने परिजनो के पास गया और उनको भी उसने सर्प की वह बात सुना दी। इस प्रकार एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे कानो में जाती हुई यह बात सब मेंढको तक पहुँच गई। उनके राजा जलपाद को भी इसका समाचार मिला। उसको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। सबसे पहले वही सर्प के पास जाकर उसके फन पर चढ़ गया। उसे चढ़ा हुआ देखकर अन्य सभी मेंढक उसकी पीठ पर चढ़ गए। सर्प ने किसी को कुछ नहीं कहा।

मन्दविष ने उन्हें भाँति-भाँति के करतब दिखाए। सर्प की कोमल त्वचा के स्पर्श को

पाकर जलपाद तो बहुत ही प्रसन्न हुआ। इस प्रकार एक दिन निकल गया। दूसरे दिन जब वह उनको बैठाकर चला तो उससे चला नहीं गया।

उसको देखकर जलपाद ने पूछा, “क्या बात है, आज आप चल नहीं पा रहे हैं?”

“हां, मैं आज भूखा हूं इसलिए चलने में कठिनाई हो रही है।” जलपाद बोला,

“ऐसी क्या बात है। आप साधारण कोटि के छोटे-मोटे मेंढको को खा लिया कीजिए।”

इस प्रकार वह सर्प नित्यप्रति बिना किसी परिश्रम के अपना भोजन पा गया। किन्तु वह जलपाद यह भी नहीं समझ पाया कि अपने क्षणिक सुख के लिए वह अपने वंश का नाश करने का भागी बन रहा है। सभी मेंढको को खाने के बाद सर्प ने एक दिन जलपाद को भी खा लिया। इस तरह मेंढको का समूचा वंश ही नष्ट हो गया।

सीख : अपने हितैषियों की रक्षा करने से हमारी भी रक्षा होती है।

## वसं की रत्ना

किमी पत्रतु पदमें भभनविध नाम का एक वस्तुमग्न करतु था। एक दिन वरु विचार करन लगा कि जिभा कृ उपाय रुभेकतु रु, एिभम गिन परिमभ किर की उभकी सुखीविका गलती रुका उभक भन भउम एक विचार सुया।

वरु मभीप क भेदिक भेहर उलाग क पोम गला गया। वरु पदगिर कर वरु गती गती मउपर-उपर भभन लेगा। उभ उभ प्रकार भभतु एपिकर उलाग क किनार एक पत्रु पर गठे भेदिक क सुमदु रुमु उ उभन पेका,

“भाभा! सुए कृ गतु रु? माभ रु गेरु रु, किनु उमु रुएन-पानी की वस्तुमग्न नकी कर रु रु?”

मग्न रु एपी भन म केरुन लेगा,

“गए! कृ करु, भु उ उेग रुएन की सुखिलाधा की नकी रु गेरु रु। सुए गतु मेवर की भेदिक की एए भनिकल पका था। एक मरवेर क उए पर भन एक भेदिक क एपि। भउमक पेकतुन की मणे की रुका था कि उभन भु एपि लिया। मभीप की कुरु गुरु मणुय भलीन घ, वरु उनक भणुएकर ककी छिप गया।” उभक उे भन एर एपि नकी। किनु उभक रुम भभन एक गुरु क पेडु क गेगु के केए लिया। उभ उभकी उअकल भु रु गेरु। उभक पिउ क उभका गरा एप रुमु एर उभ मकेरुलु पिउ न भु मप एउे रु करु,

“एउे उभन भन पेडु क गिन किमी सुपराण क केए रु, सुपन उभ सुपराण क केए” उभक भेदिक के वरुन गनन पकगा। “गम, उमु लगे के वरुन गनन के उमु म की भयेका उमु लगे क पोम सुया रु।”

भेदिक मग्न येरु गतु मत्रकर सुपन पेरिएन के पोम गया एर उनक ही उभन भेगुकी वरु गतु मत्रा पी। उभ प्रकार एक म एमर एर एमर मे उीमर केन भेदिक रु वरु गतु मग्न भेदिक उेक पदगिर गेरु। उनक गेरु एलपाद क ही उभका मभाएर भिला। उभक येरु मत्रकर गरा सुमदु रुमु। मग्न पेकल वेकी मग्न पोम एकर उभक टन पर गद गया। उभ गद रुमु एपिकर मनु मही भेदिक उभकी पी० पर गद गाग। मग्न किमी क केरु नकी करु।

भनविध न उेन रुगि-रुगि क केरुम एिपाग। मग्न की कभेल उगा क मनु क पोकर एलपाद उे गेरु की पमन रुमु। उभ प्रकार एक दिन निकल गया। एमर दिन एग वरु उनक गेरु कर गला उ उेभन गला नकी गया।

उभक एपिकर एलपाद न पेका, “कृ गतु रु, सुए सुप गल नकी पा रु रु?”

“रु, भुए रु ए उभलिया गलन भे के गिन रु गेकी रु” एलपाद गले,

“जिमी कृ गतु रु सुप मणर” कए क केए भे भेदिक के पो लिया कीएग।”

उभ प्रकार वरु मग्न उउुति गिन किमी परिमभ क सुपन रुएन पा गया। किनु वरु एलपाद वरु ही नकी मभा पाया कि सुपन बेक मप क लिए वरु सुपन वेम का नाम करन के रुगी गन रुका रुभेकी भेदिक के पो न के गेद मग्न एक दिन एलपाद क ही पा लिया। उभ उरु भेदिक के मभाएर वं की नप रु गेया।

मीप : सुपन रुिउधिये की रत्ना करन मे रुभारी ही रत्ना रुती रु

मनराद - विदु कील एला